इस्लाम के पैग़म्बर
मुहम्मद
सल्ल्लाल्हु अलैहि व सल्लम

प्रोफेसर के. एस. रामाकृष्णाराव
अध्यक्ष, दर्शन-शास्त्र विभाग, राजकीय
कन्या विद्यालय, मैसूर (कर्नाटक)

www.islamhouse.com
1428-2007
यह ई-पुस्तक मघुद संदेश संगम नई दिल्ली-२ द्वारा प्रकाशित १५६० ई. के एडिशन पर आधारित है।

इसे पुनः टाइप और शोधकर ई-पुस्तक के स्वरूप में इस्लामहाउस डाओम - www.Islamhouse.com - पर प्रकाशित किया जा रहा है। इसे पुस्तक रूप में प्रिंट करने की सहूलत भी उपलब्ध है। अताउद्दीमान
इस्लाम के पैगम्बर मुहम्मद

मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम) का जन्म अरब के रेगिस्तान में मुस्लिम इतिहासकारों के अनुसार 20 अप्रैल सन 571 ई० में हुआ। 'मुहम्मद' का अर्थ होता है 'जिस की अत्यन्त प्रशंसा की गई हो।' मेरी नज़र में आप अरब के तमाम संस्कृतियों में महाप्रग्द और सब से उच्च बुद्धि के व्यक्ति हैं। क्या आप से पहले और क्या आप के बाद, इस लाल रंगीले अगम रेगिस्तान में जन्मे सभी कवियों और शासकों की अपेक्षा आप का प्रभाव कहीं ज्यादा व्यापक है।

जब आप प्रकट हुए अरब उपमहाद्वीप केवल एक सूना रेगिस्तान था। मुहम्मद (सल्लल्लाहु) की सशक्त आत्मा ने इस सूने रेगिस्तान से एक नये संसार का निर्माण किया। एक नये जीवन का, एक नये संस्कृति और नये सभ्यता का। आप के द्वारा एक ऐसे नये राज्य की स्थापना हुई, जो मरक्का से लेकर इंडिज तक फैला। और जिसने तीन महाद्वीपों—एशिया, अफ्रीका और यूरोप के विचार और जीवन पर अपना असर डाला।
मैंने जब पैगम्बर मुहम्मद (ﷺ) के बारे में लिखने का इरादा किया, तो पहले तो मुझे संकोच हुआ, क्योंकि यह एक ऐसे धर्म के बारे में लिखने का मामला था जिसका मैं अनुयायी नहीं हूँ। और यह एक नाजुक मामला भी है, क्योंकि दुनिया में विभिन्न धर्मों के मानने वाले लोग पाये जाते हैं और एक धर्म के अनुयायी भी परस्पर विरोधी मतों (Schools of Thoughts) और फिरकों में बंटे रहते हैं।

हालांकि कभी-कभी यह दावा किया जाता है कि धर्म पूर्णतः एक व्यक्तिगत मामला है, लेकिन इस से इनकार नहीं किया जासकता कि धर्म में पूरे जगत को अपने घरों में लेने की प्रवृत्ति भी जाती है, चाहे उसका संबंध प्रत्यक्ष से हो या अप्रत्यक्ष चीजों से। यह किसी न किसी और कभी न कभी हमारे हृदय, हमारी आत्माओं और हमारे मन और मस्तिष्क में अपनी राह बना लेता है। चाहे उसका तबअल्लुक उसके चेतन से हो, अचेतन या अचेतन से हो या किसी ऐसे हिस्से से हो जिस की हम कल्पना कर सकते हैं। यह समस्ता उस समय और ज्यादा गंभीर और अत्यन्त महत्वपूर्ण हो जाती है जब फिर इस बात का गहरा यकीन भी हो कि हमारा भूत, वर्तमान और भविष्य सब के सब एक अत्यन्त कोमल, नाजुक, संवेदनशील रेशमी सूत्र से बंधे हुए हैं। यदि हम कुछ ज्यादा ही संवेदनशील हुए तो फिर हमारे सच्चुलन केंद्र
के अत्यन्त तनाव की स्थिति में रहने की संभावना बनी रहती है। इस दृष्टि से देखा जाये, तो दूसरों के धर्म के बारे में जितना कम कुछ कहा जाये उतना ही अच्छा है। हमारे धर्म को तो बहुत ही छिपा रहना चाहिए। उनका स्थान तो हमारे हृदय के अन्दर होना चाहिए और इस सिलसिले में हमारी जुबान बिल्कुल नहीं खुलनी चाहिए।

लेकिन समस्या का एक दूसरा पहलू भी है। मनुष्य समाज में रहता है और हमारा जीवन चाहे—अन्नवाहे, प्रत्यह का अप्रत्यह रूप से दूसरे लोगों के जीवन से जुड़ा होता है। हम एक ही धरती का अध्यात्म खाते हैं, एक ही जल स्रोत का पानी पीते हैं और एक ही वायुमंडल की हवा में सांस लेते हैं। ऐसी दशा में भी, जबकि हम अपने मिज़जी विचारों व धार्मिक धारणाओं पर काम करते हैं, अगर हम थोड़ा बहुत या भी जान ले कि हमारा पड़ोसी किस तरह सोचता है, उसके कर्म के मुख्य प्रेरक स्रोत क्या हैं? तो यह जानकारी कम से कम अपने माहौल के साथ तालमेल पैदा करने में सहायक बनेगी। यह बहुत ही प्रसन्नदीदा बात है कि आदमी को संसार के तमाम धर्मों के बारे में उचित भावना के साथ जानने की कोशिश करनी चाहिए ताकि आपसी जानकारी और मेले-मिलाप को बढ़ावा मिलে और हम बेहतर तरीके से अपने करीब या दूर के पास-पड़ोसी की कृपा कर सकें।
फिर हमारे विचार वास्तव में उतने बिखरे नहीं हैं
जैसा कि वे ऊपर से दिखाई देते हैं। वास्तव में वे कुछ
केंद्रों के गिर्द जमा होकर स्टाफिक जैसा रूप धारण कर
लेते हैं, जिन्हें दुनिया के महान धर्मों और जीवनक
आस्थाओं की सूत्र में देखते हैं। जो धरती में लाखों
जिन्दगियों का मार्ग—दर्शन करते और उन्हें प्रेरित करते
है। अत: अगर हम इस संसार के आदर्श नागरिक बनना
चाहते हैं तो यह हमारी जिम्मेदारी भी है कि हम उन
महान धर्मों और दार्शनिक सिद्धांतों को जानने की अपने
वस्त्र भर कोशिश करे, जिन का मानव पर शासन रहा है।

इन आरम्भिक टिपणियों के बावजूद धर्म का क्षेत्र
ऐसा है, जहां प्रायः बुद्धि और संवेदन के बीच संघर्ष पाया
जाता है। यहां फिर भी हमारी इल्मी सम्मानना रहती है कि
आदमी को उन कम समझ लोगों का बराबर ध्यान रखना
पड़ता है, जो वहां भी घुमाने से नहीं चूकते, जहां प्रवेश
करते हुए फिरिते भी डरते हैं। इस पहलु से भी यह
अव्यय जटिल समस्या है। मेरे लेख का विषय एक
विशेष धर्म के सिद्धांतों से है। वह धर्म ऐतिहासिक है
और उसके पैगम्बर का व्यक्तित्व भी ऐतिहासिक है। यहां
तक कि सर विलियम म्यूर, जैसा इस्लाम विरोधी
आलोचक भी कुरआन के बारे में कहता है, “शायद
संसार में (कुरआन के अतिरिक्त) कोई अन्य पुस्तक ऐसी
नहीं है, जो बारह शताब्दियों तक अपने विश्वसू धूम के
साथ इस प्रकार सुरक्षित हो।’ में इस में इतना और बढ़ा सकता हूँ कि पेगमबर मुहम्मद (ﷺ) भी एक ऐसे अकेले ऐतिहासिक व्यक्ति हैं, जिन के जीवन की एक-एक घटना को बड़ी साक्षात्कारी के साथ आने वाली नस्लों के लिए सुरक्षित कर लिया गया है। उन का जीवन और उन के कार्यक्षेत्र रहस्य के परदों में छुपे हुए नहीं हैं। उनके बारे में सही-सही जानकारी प्राप्त करने के लिए किसी को सर ख्यातनां और भटकने की जरूरत नहीं। सत्य रूपी मोक्त प्राप्त करने के लिए देर सारी रात से भूसा उड़ा कर चब्ब दाने प्राप्त करने जैसे कठिन परिश्रम की जरूरत नहीं है।

मेरा काम इसलिए और आसान हो गया है कि अब वह समय तेजी से गुज़र रहा है, जब कुछ आलोचक इस्लाम का गुलत और बहुत ही आमक चित्रण किया करते थे। प्रोफेसर बीवन ‘कैम्ब्रिज मेडियाल हिस्ट्री’ (Cambridge Medieval History) में लिखता है, “इस्लाम और मुहम्मद के संबंध में 19 वीं सदी के आरम्भ से पूर्व गूरों में जो पुस्तकें प्रकाशित हुई उन की हैं। इसमें जो कंप्यूटर राष्ट्रीय कुल समस्तों का रह गया है।”

मेरे लिए पेगमबर मुहम्मद (ﷺ) के जीवन चरित्र के लिखने की समस्या बहुत ही आसान हो गयी है, क्योंकि अब हम इस प्रकार के श्राकम ऐतिहासिक लघुकों का
सहारा लेने के लिए मजबूर नहीं हैं और इस्लाम के संबंध में भ्रामक निरूपणों के स्पष्ट करने में हमारा समय बर्बाद नहीं होता।

मिसाल के तौर पर इस्लामी सिद्धांत और तलवार की बात किसी उल्लेखनीय क्षेत्र में जोरदार अनुदार में सुनने को नहीं मिलती। इस्लाम का यह सिद्धांत कि ‘धर्म के मामले में कोई जोर-जबरदस्ती नहीं’, आज सब पर भली-भांति विदित है। विश्व विख्यात इतिहासकार गिबन ने कहा है, ‘मुसलमानों के साथ यह गुलत और घातक धारणा जोड़ दी गई है कि उन का यह कर्त्तव्य है कि ‘वे हर धर्म का तलवार के जोर से उन्मूलन कर दें’। इस इतिहासकार ने कहा है कि ‘यह जाहिलाना इल्जाम कुरआन से भी पूरे तौर पर खनिज हो जाता है और मुस्लिम विजेताओं के इतिहास तथा इसाइयों की पूजा-पाठ के प्रति उन की ओर से कानूनी और सार्वजनिक उदासों का जो प्रदर्शन हुआ है उस से भी यह इल्जाम तथ्यों सिद्ध होता है।’
एक कबीले के मेहमान का ऊंट दूसरे कबीले की चरणाम में गुलाम से चले जाने की छोटी सी घटना से उत्तेजित होकर जो अरब चालीस वर्ष तक ऐसे भयानक रूप से लड़ते रहे थे कि दोनों पक्षों के कोई सत्तर हजार आदमी मारे गये, और दोनों कबीलों के पूर्ण विनाश का भय पैदा हो गया था, उस उम्र क्रोधातुर और लड़ाकू कौम को इस्लाम के पैगम्बर ने आत्म समय एवं अनुशासन की ऐसी शिक्षा दी, ऐसा प्रशिक्षण दिया कि वे युद्ध के मैदान में भी नमाज अदा करते थे।

विरोधियों से समझौते और मेल-मिलाप के लिए आप ने बार-बार प्रयास किये, लेकिन जब सभी प्रयास बिल्कुल विफल हो गये और हालात ऐसे पैदा होंगे कि आप को केवल अपने बचाव के लिए लड़ाई के मैदान में आना पड़ा तो आप ने रण नीति को बिल्कुल ही एक नया रूप दिया। आप के जीवन-काल में जितनी भी लड़ाईयां हुई —यहां तक कि पूरा अरब आप के अधिकार क्षेत्र में आ गया— उन लड़ाइयों में काम आने वाली इस्लामी जानों के संख्या चट्टे सी से अधिक नहीं है।

आप ने बर्बर अरबों को सर्वशक्तिमान अल्लाह की उपासना यानी नमाज की शिक्षा दी, अकेले—अकेले अदा
करने की नहीं, बल्कि सामूहिक रूप से अदा करने की, यहां तक कि युद्ध विभीषिका के दौरान भी। नमाज़ का निश्चित समय आने पर और यह दिन में पांच बार आता है -सामूहिक नमाज़ (नमाज़ जमायत के साथ) का परिचय करना तो दूर उसे स्थगित भी नहीं किया जा सकता। एक गरोह अपने खुदा के आगे सिर झुकाने में, जब तक दूसरा शत्रु से जुझने में व्यस्त रहता। जब पहला गरोह नमाज़ अदा कर चुकता तो वह दूसरे का स्थान ले लेता और दूसरा खुदा के सामने झुक जाता।

बर्बरता के युग में मानवता का विस्तार रण भूमि तक चढ़ा गया। कहते हैं आदेश दिये गये कि न तो लाठों के अंगं भंग किये जायें और न किसी को धोखा दिया जाये और न धरीरास्थिय किया जाये और न गहरा किया जाये और न बच्चों, औरतों या बूढ़ों को कूड़ किया जायें, और न खजूरों और दूसरे फलदार पेड़ों को काटा या जलाया जायें। और न संसार-व्यापी सन्तों और उन लोगों को छेड़ा जायें जो इबादत में लगे हों। अपने कहर से कहर दुशमनों के साथ खुद पैगम्बर सहब का यथार्थ आप के अनुयायियों के लिए एक उतम आदेश था। मक़ििं के अपने विजय के समय आकर अपनी अधिकार शक्ति की पराक्रमा पर आसीन थे। वह नगर जिसने आप को और आप के साथियों को सतता और तकलीफ़ दी, जिसने आप को और आप के साथियों को देश
निकाला दिया और जिस ने आप को दूरी तरह सताया और बायफाट किया, हालांकि आप दो सी मील से अधिक दूरी पर पनाह लिये हुए थे। वह नगर आज आप के कदमों में पड़ा था। युद्ध के नियमों के अनुसार आप और आप के साथियों के साथ कृृता का जो व्यवहार किया गया, उस का बदला लेने का आप को पूरा हक हासिल था। लेकिन आप ने इस नगर वालों के साथ कैसा व्यवहार किया? हज़रत मुहम्मद का इद्दय प्रेम और करुणा से छलक पड़ा। आप ने ऐलान किया, “आज तुम पर कोई इज़ाम नहीं और तुम सब आज़ाद हो।”

आज़ाद खाम में युद्ध की अनुमति देने के उच्च लक्ष्यों में से एक यह भी था कि मानव को एकता के सूत्र में पिंपोया जाए। अतः जब यह लक्ष्य पूरा होगा तो बदतरीन दुश्मनों को भी माफ कर दिया गया। यहां तक कि उन लोगों को भी माफ कर दिया गया, जिन्होंने आप के चाहते चरा ‘हमजा’ को क्लास करके उनके शाव को विकृत किया और पेट चीर कर कर्लेजा निकाल कर चबाया।

सार्वभौमिक भाई-चारे का नियम और मानव समाज का चिंतान, जिस का ऐलान आप ने किया, वह उस महान योगदान का परिचायक है जो हज़रत मुहम्मद (ﷺ) ने मानवता के सामाजिक उद्धार के लिए दिया। यों तो सभी बड़े धर्मों ने एक ही सिद्धांत का
प्रश्न किया है, लेकिन इसलाम के पैगम्बर ने इन को व्यवहारिक रूप देकर पेश किया। इस योगदान का मूल्य शायद उस समय पूरी तरह स्वीकार किया जा सकेगा, जब अन्तरराष्ट्रीय चेतना जाग जाएगी, जांचित क्षेत्र पश्चात और पूर्वाग्रह पूरी तरह मिट जायेगे और मानव भाई-चारे को एक मजबूत धारणा वास्तविकता बन कर सामने आयेगी।

इसलाम के इस पहलू पर विचार व्यक्त करते हुए सरोजनी नायदू कहती हैं:

"यह पहला धर्म था जिसने जमहूरियत (लोकतंत्र) की शिक्षा दी और उसे एक व्यवहारिक रूप दिया। मिसाल के तौर पर जब मीनारों से अजाना दी जाती है और इबादत करने वाले मस्जिदों में जमा होते हैं तो इस्लाम की जमहूरियत (जनतंत्र) एक दिन में पांच बार साकार होती है, जब रंग और राजा एक दूसरे से कंधे से कंधा मिलाकर खड़े होते हैं और पुकारते हैं 'अल्लाह अल्लाह ही बड़ा है।’"

भारत की महान कवयित्री अपनी बात जारी रखते हुए कहती हैं:

"मैं इस्लाम की इस अविभाज्य एकता को देख कर बहुत प्रभावित हुई हूँ, जो लोगों को सहज रूप में एक दूसरे का भाई बना देती है। जब आप एक मिस्री, एक
अलजीरियाई, एक हिन्दुस्तानी और एक तुर्क से लद्दन में मिलते हैं तो आप महसूस करते कि उनकी निगाह में इस चीज का कोई महत्व नहीं है कि एक का संबंध मिस्र से है और एक का वतन हिन्दुस्तान आदि है।"

महात्मा गांधी अपनी अदभुत शैली में कहते हैं :

"कहा जाता है कि यूरोप वाले दक्षिणी अफ्रीका में इस्लाम के प्रसार से भयभीत हैं। उस इस्लाम से! जिसने स्पेन को समय बनाया, उस इस्लाम से जिसने मराक्जा तक रोशनी पहुँचाई और संसार को भाई-चारे की इज्ज़त पड़ाई। दक्षिणी अफ्रीका के योरोपियन इस्लाम के फैलाव से बस इस लिए भयभीत हैं कि उसके अनुयायी गोरों के साथ कहीं समानता की मांग न कर बैठे। अगर ऐसा है तो उनका कहना ठीक ही है। यदि भाई-चारा एक पाप है, यदि काली नस्लों की गोरों से बराबरी ही वह चीज है, जिससे वह उपर रहें हैं, तो फिर (इस्लाम के प्रसार से) उनके चरने का कारण भी समझ में आ जाता है।"

दुनिया हर साल हज्ज के मौके पर रंग, नस्ल और जाति आदि के भेदभाव से मुक्त इस्लाम के चमत्कारपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय भव्य प्रदर्शन को देखती है। यूरोपवासी ही नहीं, बल्कि अफ्रीकी, फारसी, भारतीय, चीनी आदि सभी मका में एक ही दिव्य परिवार के सदस्यों के रूप में
एकत्र होते हैं, सभी का लिबास एक जैसा होता है। हर आदमी बर्गें दिली दो सफेद चादरों में होता है, एक कमर पर बंधी होती है तथा दूसरी कंधों पर पड़ी हुई। सब के सिर खुले हुए होते हैं, ‘मैं हाजिर हूँ, ऐ खुदा, मैं तेरी आज़ाद के पालन के लिए हाजिर हूँ, तू एक है और तेरा कोई शरीक नहीं।’ इस प्रकार कोई ऐसी चीज़ बाकी नहीं रहती, जिसके कारण किसी को बड़ा कहा जाये, किसी को छोटा। और हर हाजी इस्लाम के अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व का प्रभाव लिए घर वापस लेता है।

प्रोफेसर हर्जेन्ड्रा (भत्तहतवदरम) के शब्दों में :

“पैगम्बर इस्लाम द्वारा स्थापित राष्ट्र संघ ने अंतर्राष्ट्रीय एकता और मानव भावना के नियमों को ऐसे सार्वभौमिक आधारों पर स्थापित किया है जो अन्य राष्ट्रों को मार्ग दिखाते रहेंगे।”

यह आगे लिखता है:

“वास्तविकता यह है कि राष्ट्र-संघ की धारणा को वास्तविक रूप देने के लिए इस्लाम का जो कारनामा है, कोई भी अन्य राष्ट्र उसकी मिसाल पेश नहीं कर सकता।”

पैगम्बर इस्लाम ने लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली को उसके उत्कृष्टतम रूप में स्थापित किया। खलीफ़ा उमर और खलीफ़ा अली (पैगम्बर इस्लाम के दामाद), खलीफ़ा
मनसूर, अब्बास (खलीफा मामून के बेटे) और कई दूसरे खलीफा और मुस्लिम सुल्तानों को एक साधारण व्यक्ति की तरह इस्लामी अदालतों में जज के सामने पेश होना सजा। हम सब जानते हैं कि काले नीग्रो लोगों के साथ आज भी ‘सम्य’ सफेद रंग काले कैसा व्यवहार करते हैं?
फिर आप आज से चौंदह शताब्दी पूर्व इस्लाम के पैगम्बर के समय के काले नीग्रो बिलाल के बारे में अंदाजा कीजिए। इस्लाम के आरम्भिक काल में नमाज के लिए अजज्ञाम देने की सेवा को अत्यंत आदरणीय व समान जनक पद समझा जाता था और यह आदर इस गुलाम नीग्रो को प्रदान किया गया था। मक्का पर विजय के बाद उन को हुक्म दिया गया कि नमाज के लिए अजज्ञाम दें और यह काले रंग और मोटे हों वाला नीग्रो गुलाम इस्लामी जगत के सबसे पवित्र और ऐतिहासिक भवन, पाक काबा, की छत पर अजज्ञाम देने के लिए चढ़ गया।
उस समय कुछ अभिमानी अरब चिल्ला उठे ‘आह बुरा हो उसका, वह काले हस्ती गुलाम अजज्ञाम के लिए पवित्र काबा की छत पर चढ़ गया है।’
शायद यही नस्ली गर्व और पूर्वांग्रह था जिस के जवाब में आप (ﷺ) ने एक खुल्चा दिया। वास्तव में इन दोनों चीजों को जड़ बुनियाद से खन्ना करना आप के लक्ष्य में से था। अपने खुल्चे में आप ने फर्माया:
“सारी प्रशंसा और शुक्र अल्लाह के लिए है, जिस ने हमें अज्ञान काल के अभिमान और अन्य बुराइयों से छुटकारा दिया। ऐ लोगों, यदि रखो कि सारी मानव-जाति के वर्गों दो श्रेणियों में बांटी है: धर्म-निष्ठा और अल्लाह से डरने वाले लोग जो कि अल्लाह की दृष्टि में सम्मानित हैं। दूसरे उल्लंघनकारी, अत्याचारी, अपराधी और कठोर हड़दय लोग हैं जो खुदा की निगाह में गिरे हुए और त्यसप्रूत हैं। अन्यथा सभी लोग एक आदम की ओलाद हैं और अल्लाह ने आदम को मिस्त्री से पैदा किया था।”

इसी की पुष्टि कुरआन में इन शब्दों में की गई है:

“ऐ लोगो! जबने तुम को एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और तुमने बिश्ल जातियों और धन्य बनाये ताकि तुम एक दूसरे को पहचानों, निःस्वदेह अल्लाह की दृष्टि में तुम में सब से अधिक सम्मानित वह है जो (अल्लाह से) सब से ज्यादा डरने वाला है। निःस्वदेह अल्लाह खूब जानने वाला और पूरी तरह खबर रखने वाला है।” (सूरा: हुजरात-13)

इस प्रकार पैगाम्बर इस्लाम आदमों में ऐसा जबरदस्त परिवर्तन करने में सफल हो गये कि सबसे पतित और सम्मानित समझे जाने वाले खानदानों के अवसरों ने भी इन नींदो गुलाम का जीवन साथी बनाने के लिए अपनी
बेटियों से विवाह करने का प्रस्ताव किया। इस्लाम के दूसरे खलीफा और मुसलमानों के अमीर (अध्यक्ष) जो इतिहास में उमर महान (फासके आज़म) के नाम से प्रसिद्ध हैं, इस नींवों को देखते ही तुरन्त खड़े हो जाते और इन शब्दों में उनका स्वागत करते, 'हमारे बड़े, हमारे सरदार आते हैं।'

धर्म पर उस समय की सबसे अधिक स्वाभिमानी कौम अरबों में कुरआन और पैगम्बर मुहम्मद ने कितना महान परिवर्तन कर दिया था। यही कारण है कि जर्मनी के एक बहुत बड़े शायर गोयटे ने पवित्र कुरआन के बारे में अपने उद्गार प्रकट करते हुए ऐलान किया है कि:

"यह पुस्तक हर युग में लोगों पर अपना अत्याधिक प्रभाव डालती रहेगी।"

इसी कारण जार्ज बर्नाउड शा का भी कहना है:

"अगर अगले सी सालों में इंग्लैंड ही नहीं, बल्कि पूरे यूरोप पर किसी धर्म के शासन करने की संभावना है तो वह इस्लाम है।"

इस्लाम की यह लोकतांत्रिक प्रवृत्ति है जिसने स्त्री को पुरुष की दासता से आजादी दिलाई। सर चार्ल्स ईंटोर्न ने कहा है:
“इस्लाम की शिक्षा यह है कि मानव अपने स्वभाव की दृष्टि से बेगुनाह है। यह सिखाता है कि रज्जी और पुरुष दोनों एक ही जौहर (तत्त्व) से पैदा हुए। दोनों में एक ही आत्मा है और दोनों में इसकी समान रूप से क्षमता पाई जाती है कि वे मासिक, आध्यात्मिक और नैतिक दृष्टि से उन्नति कर सकें।”

अरबों में यह परस्पर सुदृढ़ रूप से पाई जाती थी कि विरासत का अधिकारी तंत्र वही हो सकता है जो बरछा और तलवार चलाने में सिद्धस्त हो। लेकिन इस्लाम अबला का रक्षक बन कर आया और उसने औरत को पैतृक विरासत में हिस्सेदार बनाया। उसने औरतों को आज से सदियों पहले सम्पत्ति में मिलिकत का अधिकार दिया। उसके कहीं बाहर सदियों बाद 1881 ई॰ में उस इंग्लैंड ने, जो लोकतंत्र का गहवारा बना है, इस्लाम के इस सिद्धांत को अपनाया और उसके लिए ‘दि मैरीड वीमन्स एक्ट’ (विवाहित स्त्रियों का अधिनियम) नामक कानून पास हुआ। लेकिन इस घटना से बाहर सदी पहले पैग्मबर इस्लाम यह घोषणा कर चुके थे:

“औरत—मर्द युग्म में औरतें मर्दों का दूसरा हिस्सा हैं। औरतों के अधिकार का आदर होना चाहिए।”“इसका ध्यान रखे कि औरतें अपने निश्चित अधिकार प्राप्त कर पाएँ हैं (या नहीं?)।”
इस्लाम का राजनैतिक और आर्थिक व्यवस्था से सीधा सम्बंध नहीं है। बल्कि यह संबंध अप्रत्यक्ष रूप में है और जहाँ तक राजनैतिक और आर्थिक मामले इस्लाम के आचार व्यवहार को प्रभावित करते हैं, उसी सीमा में दोनों क्षेत्रों में निसर्गदेह उससे कई अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्धांत प्रतिपादित किये गए हैं। प्रोफेसर मेरिंगनन के अनुसार:

"इस्लाम दो प्रतिकूल अतिशयों के बीच सच्चुलन स्थापित करता है और चरित्र निर्माण का, जो कि सम्पत्ति की बुनियाद है, सदैव ध्यान रखता है।"

इस उद्देश्य को प्राप्त करने और समाज विरोधी तत्वों पर क़बूल पाने के लिए इस्लाम अपने विरासत के कानून और संगठित प्रदर्शन जैसी संस्कृति की व्यवस्था से काम लेता है। और एकाधिकार (इजारादारी), सुदं खारी, अप्राप्त आमदनियों और लाभों को पहले ही निषिद्ध कर लेने, मंडियों पर क़ब्ज़ा कर लेने, जखीरा अन्दोजी (Hoarding) बाजार का सारा सामान खरीद कर कीमतें बढ़ाने के लिए कुश्तिय अभाव पैदा करना, इन सब कामों को इस्लाम ने अर्थव्यवस्था घोषित किया है। इस्लाम में तुष्वा भी अवधि है। जबतक शिक्षा-संस्थाओं, इबादतगाहों और चिकित्सालयों की सहायता करने, कुरूं खोदने यतीमखानों स्थापित करने को पुष्पमय काम घोषित किया। कहा जाता है कि यतीमखानों की स्थापना का आरम्भ पैगम्बर इस्लाम की शिक्षा से ही हुआ। आज का संसार अपने
यसीमख़ानों की स्थापना के लिए उसी पैगंबर का आमर्श है, जो कि ख़ुद यसीम था। कारशायल पैगंबर मुहम्मद के बारे में अपने उद्गार प्रकट करते हुए कहता है:

“यह सब भलाईया बताती हैं कि प्रकृति की गोद में पले बढ़े इस मरुस्थलीय पुत्र के हृदय में; मानवता, दमा, और समता के भाव का नैसर्गिक वायस था।”

इस इतिहासकार का कथन है किसी महान व्यक्ति की परखों नीन बातों से की जा सकती है। क्या उसके समकालीन लोगों ने उसे सहस्त्र, तेजस्वी और सच्चे आवरण का पाया? क्या उसने अपने युग के स्तरों से ऊँचा उठाने में उल्लेखनीय महानता का परिचय दिया? क्या उसने सामान्यत: पूरे संसार के लिए अपने पीछे कोई स्थाई धरोहर छोड़ी? इस तालिका को और लम्बा किया जा सकता है, लेकिन जहां तक पैगंबर मुहम्मद (ﷺ) का संबंध है वे जांच की इन तीनों कसौटियों पर पूर्णत: खरे उत्तरते हैं। अन्तिम दो बातों के संबंध में कुछ प्रमाणों का पहले ही उल्लेख किया जा चुका है।

इन तीन कसौटियों में पहली हैं, क्या पैगंबर इस्लाम का आप के समकालीन लोगों ने तेजस्त, सहस्त्र और सच्चे आवरण बाला पाया था?

ऐतिहासिक दस्तावेज़ साक्षी हैं कि क्या दोस्त, क्या दुश्मन, हज़रत मुहम्मद (ﷺ) के सभी समकालीन लोगों ने
जीवन के सभी मामलों व सभी क्षेत्रों में पैगम्बर इस्लाम के उत्कृष्ट गुणों, आप की निष्कलंक ईमानदारी, आप के महान नैतिक सदृश्यों तथा आप की अबाध निश्चलता और हर संदेश से मुक्त आप की विश्वसनीयता को स्वीकार किया है। यहां तक कि यहूदी और वे लोग जिनको आपके संदेश पर विश्वास नहीं था, वे भी आपको अपने झगड़ों में पंच या मध्यस्थ बनाते थे, क्योंकि उन्हें आपकी गैरजानिवंतता पर पूरा यकीन था। वे लोग भी जो आप के संदेश पर ईमान नहीं सकते थे, यह कहने पर विवश थे — “ऐ मुहम्मद हम तुमको झूठा नहीं कहते, बल्कि उसका इकार करते हैं जिसने तुम को किताब दी तथा जिसने तुमें रसूल बनाया। वक समझते थे कि आप पर किसी (जिन आदि) का असर है, जिससे छुटकारा दिलाने के लिए वे आप के विरुद्ध हिस्सा तक पर उतर आये।

लेकिन उन में जो बेहतरीन लोग थे, उन्होंने देखा कि आपके उपर एक नयी ज्योति अवतरित हुई है और वे उस ज्ञान को पाने के लिए दौड़ पड़े। पैगम्बर इस्लाम के जीवन इतिहास की यह विशिष्टता उल्लेखनीय है कि आप के निकटतम रिस्तेदार, आपके प्रिय चचेरे भाई, आप के घनिष्ठ मित्र, जो आप को बहुत निकट से जानते थे, इन्होंने आप के पैगाम की सच्चाई को दिल से माना और इसी प्रकार आप की पैगम्बरी की सत्यता को भी स्वीकार
किया। पैगम्बर मुहम्मद (ﷺ) पर ईमान ले आने वाले ये
कुलीन शिक्षित एवं बुद्धिमान रित्रेया और पुनः आप के
व्यक्तित्व में अगर धोखेबाजी और फ्रांड की जरा सी
झलक भी देख पाते या आप में धन लोकुपता देखते या
आप में आत्म-विश्वास की कमी पाते तो आप की चरित्र
निर्माण, आत्मिक जागृति तथा समाजोत्तर की सारी
आशाएं ध्वस्त होकर रह जाती। एक नये भवन के निर्माण
के लिए आप का ख़िड़का किया हुआ सारा ठंडा एक क्षण
में धराशायी हो जाता। इस के विपरीत हम देखते हैं कि
आप के अनुयायियों की निष्ठा और आपके प्रति उनके
समर्पण का यह हाल था कि उन्होंने स्वभाव से अपना
जीवन आप को समर्पित करके आपका नेतृत्व स्वीकार
कर लिया। उन्होंने आप के लिए यातनाओं और खतरों
को बीता के साथ ठंडा, आप पर ईमान लाये, आप का
विश्वास किया, आप की आज्ञाओं का पालन किया और
आपका हार्दिक सम्मान किया। और यह सब कुछ उन्होंने
दिल दहला देने वाली यातनाओं के बावजूद किया। तथा
सामाजिक वहीकर से उत्पन्न घोर मानसिक यंत्रण को
शांतिपूर्वक सहन किया। यहां तक कि इसके लिए
उन्होंने मौत तक की परवाह नहीं की। क्या यह सब कुछ
उस हालत में भी संभव होता यदि वे अपने नेता में
तनिक भी भ्रष्टता या अनैतिकता पाते?
आरंभिक काल में इस्लाम स्वीकार करने वालों के ऐतिहासिक किस्से पढ़िये तो इन बेकुसूर वर्गों और ओरंगों पर ध्याये गये गैर इस्लामी अत्याचारियों को देखते हुए कोना सा दिल है जो रो न पड़ेगा? एक मासूम ओरंगु सुमेरा (रजियल्लहु अन्हा) को बेहोमी के साथ बरछे मार-मार कर हलाके कर डाला गया। एक मिसाल यासिर की भी है, जिनकी दांगों को दो ऊंटों से बांध दिया गया, और फिर उन ऊंटों को विपरीत दिशा में हांका गया। खुबाब बिन अरस को धमकते हुए कोलों पर लिटा कर निर्दयी जालिम उन के सीने पर खड़ा हो गया, ताकि वे हिलबुल न सकें, यहां तक कि उन की खाल जल गयी और चर्बी पिघल कर निकल पड़ी। और खुबाब बिन अरस के गोरट को निर्ममता से नोच-नोच कर तथा उनके अंग-काट-काट कर उन की हत्या की गयी। इन यात्राओं के बीच उन से पूछा गया, क्या अब वे यह न चाहेंगे कि उनकी जगह पर पैगंबर मुहम्मद हों? (जो कि उस बक़्र अपने घर वालों के साथ अपने घर में थे) तो पीछे खुबाब ने ऊंट रस में कहा कि पैगंबर मुहम्मद को एक काफी चुनाव की मामली तकलीफ से बचाने के लिए भी वे अपनी जान, अपने बच्चों एवं परिवार, अपना सब कुछ कुश्ती करने के लिए तैयार हैं। इस तरह के दिल दहलाने वाले बहुत से वाकियों पेश किए जा सकते हैं, लेकिन यह सब घटनाएं आखिर क्या सिद्ध करती हैं?
ऐसा कैसे हो सका कि इस्लाम के इन बेटे और बेटियों ने अपने पैगंबर के प्रति केवल निष्ठा ही नहीं दिखाई, बल्कि उन्होंने अपने शरीर, हृदय और आत्मा का नज़राना उन्हें पेश किया? पैगंबर अज़दद के प्रति उनके निरक्ततम अनुयायियों की यह दृढ़ आत्मा और विश्वास, क्या उस कार्य के प्रति, जो पैगंबर मुहम्मद के सुपुर्द किया गया था, उन की ईमानदारी, निष्पक्षता तथा तम्भयता का अत्यन्त उत्तम प्रमाण नहीं है?

ध्यान रहे कि ये लोग न तो निचले दर्जे के थे और न कम अकल वाले। आप के मिशन के आरम्भिक काल में जो लोग आप के चारों ओर जमा हुए वे मक्का के श्रेष्ठलोग थे, उसके फूल और मक्खन, ऊंचे दर्जे के, धनी और सम्म थे। इन में आप के खानदान और परिवार के करीबी लोग भी थे, जो आप की अन्धरूनी और बाहरी जिन्दगी से मली-भाली परिचित थे। आरम्भ के चारों खालिफा भी, जो कि महान व्यक्ति के मालिक हुए, इस्लाम के आरम्भिक काल ही में इस्लाम में दाखिल हुए।

‘इस्लामलो और इमामिया विराटानिका’ में उल्लिखित है:

“समस्त पैगंबरों और धार्मिक क्षेत्र के महान व्यक्तियों में मुहम्मद (स) सब से ज्यादा सफल हुए हैं।”

लेकिन यह सफलता कोई आकस्मिक चीज न थी। न ऐसा ही है कि यह आसमान से अधानक आ गिरी हो।
बल्कि यह उस वास्तविकता का फल था कि आप के समकालीन लोगों ने आप के व्यक्तित्व को साहसी और निष्ठूल पाया। यह आप के प्रशंसनीय और अत्यन्त प्रभावशाली व्यक्तित्व का फल था।
पैगम्बर मुहम्मद के व्यक्तित्व की सभी यथार्थताओं का ज्ञान लेना बड़ा कठिन काम है। मैं तो उसकी बस कुछ ज्ञानियां ही देखे सकता हूं। आप के व्यक्तित्व के कैसे-कैसे मन-भावन दृश्य गिरन्तर नाटकीय प्रभाव के साथ सामने आते हैं। पैगम्बर मुहम्मद कई हेसियत से हमारे सामने आते हैं– मुहम्मद पैगम्बर, मुहम्मद जनरल, मुहम्मद शासक, मुहम्मद योद्धा, मुहम्मद व्यापारी, मुहम्मद उपदेशक, मुहम्मद दार्शनिक, मुहम्मद राजनीतिज्ञ, मुहम्मद वक्ता, मुहम्मद समाज सुधारक, मुहम्मद यतीमों के पोषक, मुहम्मद गुरुओं के रक्षक, मुहम्मद स्त्री वर्ग का उद्धार करने और उन को बन्धनों से मुक्त कराने वाले, मुहम्मद न्याय करने वाले, मुहम्मद सन्त। और इन सभी महत्वपूर्ण भूमिकाओं और मानव-कार्य क्षेत्रों में आप की हेसियत समान रूप से एक महान नायक की है।

अनाथ अवस्था अत्यन्त बेचारगी और असहाय स्थिति का दूसरा नाम है और इस संसार में आप के जीवन का आरम्भ इसी स्थिति से हुआ। जात सत्ता इस संसार में भौतिक शक्ति की चरम सीमा होती है और आप शक्ति की यह चरम सीमा प्राप्त करने दुनिया से रुखस्त हुए। आपके जीवन का आरम्भ एक यतीम बच्चे
के रूप में होता है, फिर हम आप को एक सतायें हुए मुहाजिर के रूप में पाते हैं और आखिर में हम यह देखते हैं कि आप एक पूरी कौम के दुनियाबाल और रूहानी पंजाबा और उस की किस्मत के मालिक हो गये हैं। आप को इस मार्ग में जिन आजमाइशों, प्रलोभनों, कविताएँ और परिवर्तनों, अन्यथा और उजालों, भय और सम्मान, हालात के उत्तर-चढ़ाव आदि से गृहजनना पढ़ा, उन सब में आप सफल रहे। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आप ने एक आदर्श पुरूष की भूमिका निभाई। उस के लिए आप ने दुनिया से लोहा लिया और पूर्ण रूप से विजयी हुए। आप के कार्यों का संबंध जीवन के किसी एक पहलू से नहीं है, बल्कि ये जीवन के सभी क्षेत्रों को व्याप्त है।

उदाहरण स्वरूप अगर महानता इस पर निर्भर करती है कि किसी ऐसी जाति का सुधार किया जाये जो सर्वथा बर्बरता और असम्यता में प्रस्त हो और नैतिक दृष्टि से वह अत्यन्त अधकार में घूमी हुई हो, तो वह शक्तिशाली व्यक्ति आप हैं, जिससे अरबों जैसी अत्यन्त परती में गिरी हुई कौम को ऊंचा उठाया, उसे सम्यता से सुसज्जित कर के कुछ से कुछ कर दिया, उससे उसे दुनिया में ज्ञान और सम्यता का प्रकाश फैलाने वाली बना दिया। इस तरह आप का महान होना पूर्ण रूप से सिद्ध होता है। यदि महानता इस में है कि किसी समाज के
परस्पर विरोधी और विखरे हुए तत्त्वों को भाईचारे और दयािभक के सूत्रों द्वारा बाँध दिया जाए तो महसुल में जन्में पैगम्बर निःसन्देह इस विश्वस्ता और प्रतिष्ठा के पात्र हैं। यदि महानता उन लोगों के सुधार करने में है जो अन्ध विश्वासों तथा इस प्रकार की हानिकारक प्रथाओं और आदर्शों में प्रस्त होंगे तो पैगम्बर इस्लाम ने लाखों लोगों को अन्ध विश्वासों और बेदुनिया भय से मुक्त किया। अगर महानता उच्च आधरण पर आधारित होती है, तो शानुओं और मित्रों दोनों ने मुहम्मद साहब को “अल-अमीन” और “अस-सादिक” विश्वसनीय और सत्यवादी स्वीकार किया है। अगर एक विजेता महानता का पात्र है तो आप एक ऐसे व्यक्ति हैं जो अनाथ और असहयोगी और साधारण व्यक्ति की स्थिति से उभरे और खुसरों और कृपक की तरह अर्ध उपमहाद्वीप के स्वतंत्र शासक बने। आप ने एक ऐसा महान राज्य स्थापित किया जो चाहिए सदियों की लम्बी मुदत गुजरने के बावजूद आज भी मौजूद है। और अगर महानता का पैमाना वह समर्पण है जो किसी नायक को उसके अनुयायियों से प्राप्त होता है, तो आज भी सारे संसार में फौैली कहरों आताओं को मुहम्मद का नाम जादू की तरह सम्मोहित करता है।

आपने एथेन्स, रोम, ईसान, भारत या चीन के ज्ञान केंद्रों से दर्शन का ज्ञान प्राप्त नहीं किया था, लेकिन
आपने मानवता को विरस्थापी महत्त्व की उच्चतम सच्चाइयों से परिचित कराया। ये निर्धार थे, लेकिन उनको ऐसे भावपूर्ण और उत्साह पूर्ण भाषण करने की योग्यता प्राप्त थी कि लोग भाव-विभाग हो उठते और उनकी आंखों से आंसू फूट पड़ते। ये अनाथ थे और धनरीन्द्र भी, लेकिन जन-जन के हड़दय में उनके प्रति प्रेमभाव था। उन्होंने किसी सेन्य अकादमी में शिक्षा ग्रहण नहीं की थी, लेकिन फिर भी उन्होंने भयंकर कठिनाइयों और रूकावटों के बवाजूद सेन्य शक्ति जुटाई और अपनी आत्मशक्ति के बल पर, जिसमें आप अध्यान थे, कितनी ही विजय प्राप्त की। कुशलता-पूर्ण धर्म प्रचार करने वाले ईश्वर प्रदत्त योग्यताओं के लोग कम ही मिलते हैं।

डेकांड के अनुसार:

“आदर्श उपदेशक संसार के दुर्लभतम प्राणियों में से है।”

हिटलर ने भी अपनी पुस्तक ‘Mein Kamp’ (मेरी जीवन गाथा) में इसी तरह का विचार व्यक्त किया है।

वह लिखता हैः

“महान सिद्धांत शास्त्री कभी कभी ही महान नेता होता है। इसके विपरीत एक आदेशोकीय व्यक्ति में नेतृत्व की योग्यता एंदुख होती हैं। वह एक बेहतर नेता तो अवश्य होगा, क्योंकि नेतृत्व का अर्थ होता है,
इस्लाम के पैगम्बर मुहम्मद

अवाम को प्रभावित एवं संचालित करने की क्षमता।
जन-नेतृत्व की क्षमता का नये विचार देने की योग्यता से
कोई सम्बन्ध नहीं है।”

लेकिन वह आगे कहता है:

“इस धरती पर एक ही व्यक्ति सिद्धांत शास्त्री भी
हो, संयोजक भी हो और नेता भी, यह दुर्लभ है। किन्तु
महानता इसी में मिलता है।”

पैगम्बरें इस्लाम मुहम्मद (ﷺ) के व्यक्तित्व में संसार
ने इस दुर्लभतम उपलब्धि को सजीव एवं साकार देखा
है।

इस से भी अधिक विश्वासपर्यय है वह टिप्पणी जो
बास कर्त विद्वान ने की है:

“वे जैसे सांसारिक राज्यसत्ता के प्रमुख थे, वैसे ही
दीनी पेशा भी थे। मानो पोप और कैसर दोनों का
व्यक्तित्व उन अकेले में एकीमूत हो गया था। वे सीजर
(बादशाह) भी थे और पोप (अम्बगुरु) भी। वे पोप थे किन्तु
पोप के आड़म्बर से मुक्त। और वे ऐसे कैसर थे जिनके
पास राजसी ठाट-बाट, आगे-पीछे अंग्रेजक और
राजमहल न थे, न राजस्व प्राप्ति की विशिष्ट व्यवस्था।
यदि कोई स्पष्ट यह कहने का अधिकार है कि उसने
दीनी अधिकार से राज किया, तो वे मुहम्मद ही हो सकते
हैं, क्योंकि उन्हें बहुत साधनों और सहायक चीजों के
बिना ही राज करने की शक्ति प्राप्त थी। आप को इस की परवाह नहीं थी कि जो शक्ति आप को प्राप्त थी उसके प्रदर्शन के लिए कोई आयोजन करें। आप के निजी जीवन में जो सादगी थी, वही सादगी आपके सार्वजनिक जीवन में भी पाई जाती थी।"  

मक्का पर विजय के बाद 10 लाख वर्गमील से अधिक जमीन आप के कदमों तले थी। आप पूरे अरब के मालिक थे, लेकिन फिर भी वह मोटे–झोटे जूनी वस्त्रों और जूतों की चर्चा करते, बकरियाँ दूहते, घर में झाड़ू लगाते, आग जलाते और घर–परिवार का छोटा –छोटा काम भी खुद कर लेते। अपने जीवन के आखिरी दिनों में पूरा मदन धनवान हो चुका था। हर जगह सोने कांवे चांदी की बहतायत थी, लेकिन इस के बावजूद ‘अरब के इस सम्राट’ के घर के बूल्हे में कई–कई हफ्ते तक आग न जलती थी और खजूरों और पानी पर आप का गुजारा होता था। आप के घर वालों की लगतार कई–कई रातें गुंबद पेट गुजर जातीं, क्योंकि उनके पास शाम को खाने के लिए कुछ भी न होता। तमाम दिन व्यस्त रहने के बाद रात को आप नर्म बिस्तर पर नहीं, बल्कि खजूर की चटाई पर सोते। अक्सर ऐसा होता कि आप की आँखों में आँसू बह रहे होते और आप अपने सुचारू से इस की दुआ कर रहे होते कि वह आप को ऐसी शक्ति दे कि आप अपने कर्तव्यों को पूरा कर सकें। रिवायतों से मालूम
होता है कि रोटे-रोटे आपकी आवाज रूंध जाती थी और ऐसा लगता जैसे कोई बर्तन आग पर रखा हुआ हो और उसमें पानी उबलने लगा हो। आप के देहांत के दिन आप के कुल जीवन कुछ ठोकर सिक्के थे, जिनका एक भाग कर्ज की अदायगी में काम आया और बाकी जुरूरतमंद को दे दिया गया, जो आप के घर दान मांगने आ गया था। जिन वस्त्रों में आपने अंतिम सांस लिए उनमें अनेक पैवन्दे लगे रहे। वह घर जिससे पूरी दुनिया में रोशनी फैली, वह जाहिरी तौर पर अन्यथा में बूढ़ा हुआ था, क्योंकि चिराग जलाने के लिए घर में तेल न था।

परिस्थितियाँ बदल गई, लेकिन खुदा का पैगम्बर नहीं बदला। विजय हुई हो या हार, सत्ता प्राप्त हुई हो या उसके विपरीत की स्थिति हो, खुशहाली रही हो या गरीबी, प्रत्येक दशा में आप एक से रहे, कभी आप के उच्च चरित्र में अत्यंत न आया। खुदा के मार्ग और उसके कानूनों की तरह खुदा के पैगम्बरों में कभी कोई तब्दीली नहीं आया करती।
एक कहावत है — ईमानदार य्विकता खुदा का है। मुहम्मद (ﷺ) ईमानदार से भी बड़कर थे। उनके अंग-अंग में मानवता रची बसी थी। मानव सहागृहिति और प्रेम उनकी आत्मा का संगीत था। मानव सेवा, उसका उत्थान, उसकी आत्मा को विकसित करना, उसे शिक्षित करना सारांश यह कि मानव को मानव बनाना उनका मिशन था। उनका जीना, उनका मरना सब कुछ इसी एक लक्ष्य के लिए अर्पित था। उनके आचार-विचार, वचन और कर्म का एक मात्र दिशा निर्देशक सिद्धांत एवं प्रेरणा स्रोत मानवता की भलाई था।

आप अत्यन्त विनित, हर आइयार से मुक्त तथा एक आदर्श निरस्तारी थे। उन्होंने अपने लिए कौन-कौन सी उपाधियां चुनीं। केवल दो: अल्लाह का बन्दा और उसका पैगम्बर। आप वैसे ही पैगम्बर और संदेशप्राक्त थे, जैसे संसार के हर भाग में दूसरे पैगम्बर गुज़र चुके हैं। जिनमें से कुछ को हम जानते हैं और बहुत सी से नहीं। अगर इन सच्चाइयों में से किसी एक से भी ईमान उठ जाये तो आदमी मुसलमान नहीं रहता। यह तमाम मुसलमानों का बुनियादी अकोड़ा है।

एक यूरोपीय विचारक का कथन हैः
“उस समय की परिस्थितियाँ तथा उनके अनुयायियों की उनके प्रति असीम श्रृद्धा को देखते हुए पैगंबर की सब में बड़ी विचित्रता यह है कि उन्होंने कभी भी मोजज़े (चमत्कार) दिखा सकने का दावा नहीं किया।”

आप से कई चमत्कार जाहिर हुए, लेकिन उन चमत्कारों का प्रयोजन धर्म प्रचार न था। उनका श्रेय आप ने स्वयं न लेकर पुर्णत: अल्लाह का और उसके उन अलौकिक तरीकों को दिया जो मानव के लिए रहस्यमय हैं। आप स्पष्ट शब्दों में कहते थे कि वे भी दूसरे इन्सानों की तरह ही एक इन्सान हैं। आप जमीन व आसमानों के खजानों के मालिक नहीं। आप ने कभी यह दावा भी नहीं किया कि भविष्य के दर्शन में क्या कुछ रहस्य छुपे हुए हैं। यह सब कुछ उस काल में हुआ जबकि आश्चर्यजनक चमत्कार दिखाना साधू सत्यों के लिए मानूली बात समझी जाती थी और जबकि अरब हो या अन्य देश दूसरा बातावरण गैर और अलौकिक सिद्धियों के चक्र में प्रस्तुत था।

आप ने अपने अनुयायियों का ध्यान प्रकृति और उनके नियमों के अध्ययन की ओर फेंक दिया। ताकि वे उन को समझें और अल्लाह की महानता का गुणगान करें।
कुरआन कहता है—
“ और हमने आकाशों व धरती को और जो कुछ उन के बीच है, कुछ खेल के तीर पर नहीं बनाया। हमने इन्हें बस हक के साथ (सज्जनत) पैदा किया, परन्तु इनमें अधिकतर लोग (इस बात को) जानते नहीं। (कुरान : 38–39)

यह जगत न कोई श्रम है और न उद्देश्य रहित। बिन इसे सत्य और हक के साथ पैदा किया गया है। कुरान की उन आयतों की संख्या जिन में प्रकृति के सूक्ष्म निरीक्षण की दावत दी गई है, उन सब आयतों से कई गुना अधिक है जो नमाज, रोजा, हज़ आदि आदेशों से संबंधित हैं। इन आयतों का असर लेकर मुसलमानों ने प्रकृति का निकट से निरीक्षण करना आरम्भ किया।

जिसने निरीक्षण और परीक्षण एवं प्रयोग के लिए ऐसी वैज्ञानिक मनोवृत्ति को जन्म दिया, जिससे युगान्तर भी अनुभव थे। मुस्लिम वनस्पति शास्त्री इन्हें बेतार ने संसार के सभी भू-भागों से पौधे एकत्र करके वनस्पति शास्त्र पर वह पुस्तक लिखी, जिसे मेयर (Mayer) ने अपनी पुस्तक ‘Geshder Botanica’ में ‘कड़े श्रम की पुरातननिदिह’ की संज्ञा दी है। अलबरूनी ने चालीस वर्ष तक यात्रा करके खनिज पदार्थों के नमूने एकत्र किये, तथा मुस्लिम खगोलसाहित्यों 12 वर्षों से भी अधिक अवधि तक निरीक्षण और परीक्षण में लगे रहे, जबकि
अरस्तू ने एक भी वैज्ञानिक परीक्षण किये बिना भौतिक शास्त्र पर कलम उठाया। और भौतिक शास्त्र का इतिहास लिखते समय उसकी लापरवाही का यह हाल है कि उसने लिख दिया कि ‘इन्सान के दांत जानवर से ज्यादा होते हैं, लेकिन इसे सिद्ध करने के लिए कोई तकलीफ नहीं उठाई, हालाँकि यह कोई मुश्किल काम न था।

शरीर रचना शास्त्र के महान ज्ञाता शलेन ने बताया है कि इन्सान के निचले जबड़े में दो हड़िड़यां होती हैं, इस कथन को सदियों तक बिना चुनौती असंदिग्ध रूप से स्वीकार किया जाता रहा, यहां तक कि एक मुस्लिम विद्वान अब्दुल लतीफ ने एक मानवीय कंकाल का स्वयं निरीक्षण करके सही बात से दुनिया को अवगत कराया। इस प्रकार की अनेकों घटनाओं को उद्घाटन करते हुए राउबर्ट ब्रियफर्टल अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ‘The Making Of Humanity’ ‘मानवता का सर्जन’ में अपने उद्देश्य इन ग्रंथों में व्यक्त करता है—

“हमारे विज्ञान पर अरबों का आभार केवल उनकी आश्चर्यजनक खोजों या क्रांतिकारी सिद्धान्तों एवं परिवर्तनों तक सीमित नहीं है, बल्कि विज्ञान पर अरब समय का इससे कहीं अधिक उपकार है, और वह है स्वयं विज्ञान का अस्तित्व।”
यही लेखक लिखता है—

“यूनानियों ने वैज्ञानिक कल्याणों को व्यवस्थित किया, उन्हें सामान्य नियम का रूप दिया और उन्हें सिद्धांत बना किया, लेकिन जहां तक खोज—बीन करने के धेरे पूर्ण तरीकों का पता लगाने, निश्चयात्मक एवं स्वीकार्तम तथ्यों को एकत्र करने, वैज्ञानिक अध्ययन के सूक्ष्म तरीके निर्धारित करने, व्यापक एवं दीर्घकालिक अवलोकन व निरीक्षण करने तथा परीक्षणात्मक अन्वेषण करने का प्रश्न है, ये सारी विशिष्टिताएं यूनानी मिजाज के लिए बिल्कुल अजनबी थीं। जिसे आज विज्ञान कहते हैं, जो खोज—बीन की नयी विधियों, परीक्षण के तरीकों, अवलोकन व निरीक्षण की पद्धति, नाप तोल के तरीकों, तथा गणित के विकास के परिणाम स्वरूप यूरोप में उभरा, उसके इस रूप से यूनानी बिल्कुल बेहतर थे। यूरोपीय जगत को इन विधियों और इस वैज्ञानिक प्रवृत्ति से अरबों ही ने परिवर्तन कराया।
पैगम्बर मुहम्मद की शिक्षाओं की ही यह व्यवहारिक गुण है, जिसने वैज्ञानिक प्रवृत्ति को जम्म दिया। इनी र शिक्षाओं ने नित्य के काम—काज और उन कामों को भी जो सांसारिक काम कहलाते हैं आदर और पवित्रता प्रदान की। कुरआन कहता है कि इन्सान को खुदा की इबादत के लिए पैदा किया गया है, लेकिन ‘इबादत’ (पूजा) की उस की अपनी अलग परिभाषा है। खुदा की इबादत केवल पूजा—पाठ आदि तक सीमित नहीं, बल्कि हर वह कार्य जो अल्लाह के आदेशानुसार उसकी प्रसन्नता प्राप्त करने तथा मानव—जाति की भलाई के लिए किया जाये इबादत के अन्तर्गत आता है। इस्लाम ने पूरे जीवन और उससे संबंध रहे मामलों को पावन एवं पवित्र घोषित किया है। शर्त यह है कि उसे ईमानदारी, न्याय और नेत्रज्ञता के साथ किया जाए। पवित्र और अपवित्र के बीच चलें आ रहे अनुचित भेद को मिटा दिया। कुरआन कहता है कि अगर तुम पवित्र और स्वच्छ भोजन खाकर अल्लाह का आमार स्वीकार करो तो यह भी इबादत है। पैगम्बर इस्लाम ने कहा है कि यदि कोई व्यक्ति अपनी पत्नी को खाने का लुक्मा खिलाता है तो यह भी नेकी और भलाई का काम है और अल्लाह के यहां वह इसका अच्छा बदला पायेगा। पैगम्बर की एक और हदीस है—
“अगर कोई व्यक्ति अपनी कामना और ख्यातिश को पूरा करता है तो उसका भी उसे सवार भिलेगा। शर्त यह है कि वह इसके लिए वही तरीका अपनाये जो जाईज हो।”

एक सहब जो आपकी बात सुन रहे थे, आश्चर्य से बोले:

हे अल्लाह के पैगम्बर! वह तो केवल अपनी इच्छाओं और अपने मन की कामनाओं को पूरा करता है।

आप ने उत्तर दिया:

“यदि उसने अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए अवैध तरीकों और साधनों को अपनाया होता तो उसे इसकी सजा मिलती, तो फिर जाईज तरीका अपनाने पर उसे इनआम क्यों नहीं मिलना चाहिए?”

धर्म की इस नयी धारणा ने कि ‘धर्म का विषय पूर्णत: अलौकिक जगत के भागों तक सीमित न रहना चाहिए, बल्कि इसे लौकिक जीवन के उत्थान पर भी ध्यान देना चाहिए। नीति-शास्त्र और आचार-शास्त्र के नये मूल्यों एवं मान्यताओं को नयी दिशा दी। इसने दैनिक जीवन में लोगों के सामाजिक आपसी संबंधों पर स्थाई प्रभाव डाला। इसने जनता के लिए गहरी शक्ति का काम किया, इसके अतिरिक्त लोगों के अधिकारों और कर्तव्यों की धारणाओं को सुधारस्थित करना और इसका
अनपढ़ लोगों और बुद्धिमान दार्शनिकों के लिए समान रूप से ग्रहण करने और व्यवहार में लाने के योग्य होना पेगम्बर इस्लाम की शिक्षाओं की प्रमुख विशेषताएं हैं। यहां यह बात सत्कर्म के साथ दिमाग में आ जानी चाहिए कि मले कामों पर जोर देने का अर्थ यह नहीं है कि इसके लिए धार्मिक आस्थाओं की पवित्रता एवं बुद्धि को कुर्बान किया गया है। ऐसी बहुत सी विचार धाराएं हैं, जिनमें या तो व्यवहारिता के महत्व की बलि देकर आस्थाओं ही को सर्वपरिवर्तन माना गया है या फिर धर्म की शुद्धि धारणा एवं आस्था की परवाह न कर के केवल कर्म को ही महत्व दिया गया है। इन के विपरीत इस्लाम सत्य आस्था एवं सत्कर्म के नियम पर आधारित है। यहां साधन भी उतना ही महत्व रखते हैं जितना लक्ष्य। रक्षाओं को भी वही महत्व प्राप्त है जो साधनों को प्राप्त हैं। यह एक जीव इकाई की तरह है, इसके जीवन और विकास का रहस्य इन के आपस में जुड़े रहने में निहित है। अगर ये एक दूसरे से अलग होते हैं तो वे क्षीण और बिनश्च होकर रहेंगे। इस्लाम में ईमान और अमल को अलग-अलग नहीं किया जा सकता। सत्य ज्ञान के सत्कर्म में ढल जाना चाहिए, ताकि अच्छे फल प्राप्त हो सके।

"जो लोग ईमान रखते हैं और नेक अमल करते हैं, केवल वे ही स्वर्ग में जा सकेंगे।"
यह बात कुरआन में कितनी ही बार दोहराई गई है? इस बात को पवार बार से कम नहीं दोहराया गया है। सोच-विचार और ध्यान पर उम्मा अवश्य गया है, लेकिन मात्र ध्यान और सोच-विचार ही लक्ष्य नहीं है। जो लोग केवल ईमान रखे, लेकिन उसके अनुसार कर्म न करे उनका इस्लाम में कोई मुकाम नहीं है। जो ईमान तो रखें लेकिन कुर्सी भी करे उनका ईमान क्षीण है। ईस्वरीय कानून मात्र विचार पहचान नहीं, बल्कि वह एक कर्म और प्रयास का कानून है। यह दीन लोगों के लिए ज्ञान से कर्म और कर्म से परितोष द्वारा स्थायी और शास्त्री उन्नति का मार्ग दिखाता है।

लेकिन वह सच्चा ईमान क्या है, जिससे सत्कर्म का आविर्भाव होता है, जिस के फलस्वरूप पूर्ण परितोष प्राप्त होता है? इस्लाम का बुनियादी सिद्धांत ऐकेश्वरवाद है ‘अल्लाह बस एक ही है, उस से अतिरिक्त कोई ईसाह नहीं’ इस्लाम का मूल मंत्र है। इस्लाम की तारीम शिक्षाएं और कर्म इसी से जुडे हुए हैं। वह केवल अपने अलौकिक व्यक्तित्व के कारण ही अद्वितीय नहीं, बल्कि अपने दिव्य और अलौकिक गुणों और क्षमताओं की दृष्टि से भी अन्य और बेजोड़ है।

जहां तक ईश्वर के गुणों का संबंध है, दूसरी चीजों की तरह यहां भी इस्लाम के सिद्धांत अत्यधिक सुनहरे हैं। यह धारणा एक तरफ ईश्वर के गुणों से रहित होने की
कल्पना को असचीकार करती है तो दूसरी तरफ इस्लाम
उन चीजों को गुलत ठहराता है, जिनसे ईश्वर के उन
गुणों का आमास होता है, जो सर्वथा भौतिक गुण होते
हैं। एक और कुरआन यह कहता है कि उस जैसा कोई
नहीं, तो दूसरी और वह इस बात की भी पुष्टि करता है
कि वह देखता, सुनता और जानता है, वह ऐसा समाप्त
है, जिससे तनिक भी भूल—चूक नहीं हो सकती। उस की
शक्ति का प्रभावशाली जहाज़ न्याय एवं समानता के
सागर पर तैरता है। वह अत्यन्त कुपशील एवं दयावान
है, वह सबका रक्षक है। इस्लाम इस स्वीकारात्मक रूप
के प्रतिलक्षण करने ही पर बस नहीं करता, बल्कि वह
समस्या के नकारात्मक पहलू को भी सामने लाता है, जो
उसकी अत्यन्त महत्वपूर्ण विशिष्टता है। उसके अतिरिक्त
कोई दूसरा नहीं जो सबका रक्षक हो। वह हर दुःख को
जोड़ने वाला है, उसके अलावा कोई नहीं जो टूटे हुए को
जोड़ सके। वही हर प्रकार की क्षतिपूर्ति करने वाला है।
उसके सिवा कोई और उपास्य नहीं। वह हर प्रकार की
अपेक्षाओं से पर है। उसी ने शरीर की रचना की, वही
आत्माओं का सृप्त है। वही न्याय (कियामत) के दिन का
मालिक है। सारांश यह कि कुरआन के अनुसार सारे
श्रेष्ठ एवं महान गुण उस में पाये जाते हैं।

जगत के संबंध से ब्रह्मांड के सापेक्ष मनुष्य की जो
हैसियत है, उस के विषय में कुरआन कहता हैः—
“इस धरती में और आकाशों में जो कुछ है खुदा ने तुम्हारे काम में लगा रखा है। तुम्हें सृष्टि पर हुकूमत करने के लिए नियत किया गया।”

लेकिन खुदा के संबंध में कुरआन कहता है:-

“हे लोगो खुदा ने तुमको उल्कापट्ट क्षमताएँ प्रदान की हैं। उसने जीवन बनाया और मृत्यु बनाई, ताकि तुम्हारी परीक्षा की जा सके कि कौन सुकर्म करता है और कौन सही रास्ते से भटकता है।”

इसके बावजूद कि इस्लाम एक सीमा तक अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने के लिए स्वतंत्र है, वह विशेष वातावरण और परिस्थितियों तथा क्षमताओं के बीच पिरा हुआ है। इस्लाम अपना जीवन उन निरीक्षित सीमाओं के अन्दर व्यतीत करने के लिए बाध्य है, जिन पर उसका अपना कोई अधिकार नहीं है। इस संबंध में इस्लाम के अनुसार खुदा कहता है, में अपनी इच्छा के अनुसार इस्लाम को उन परिस्थितियों में पैदा करता हूँ, जिनको में उचित समझता हूँ। अतः ब्रह्मांड की सीमाओं को नशवर मानना पूरी तरह नहीं समझ सकता। लेकिन में निरन्तर ही सुख में और दुख में, तन्दुर्भीती और बीमारी में, उन्नति और अवनति में तुम्हारी परीक्षा करता है। मेरी परीक्षा के तरीके हर मनुष्य और हर समय और व्यक्ति के लिए विभिन्न हो सकते हैं। अतः मुसीबत में निराश न हो
और नाजाईज तरीकों व साधनों का सहारा न लो। यह
tो गुज़र जाने वाली स्थिति है। खुशहाली में खुदा को
भूल न जाओ। खुदा के उपहार तो तुम्हें मात्र अभावत के
रूप में मिले हैं। तुम हर समय व हर क्षण परिशोष में हो।
जीवन के इस चक्र व प्रणाली के संबंध में तुम्हारा काम
यह नहीं कि किसी दुनिया में पड़ो, बल्कि तुम्हारा कर्म
tो यह है कि मरते दम तक कर्म करते रहो।' यदि
tुमको जीवन भीत हो तो खुदा की इच्छा के अनुसार
tियों और मरते हों तो तुम्हारा यह मरना खुदा की राह
में हो। तुम इसको नियति कह सकते हो, लेकिन इस
प्रकार की नियति तो ऐसे शक्ति एवं प्राणदायित सतत
प्रयास का नाम है, जो तुम्हें संदेह सतर्क रखता है। इस
संसार में प्रातः अस्थायी जीवन को मानव अस्तित्व का
अन्त न समझ लो। मौत के बाद एक और जीवन भी है,
जो संदेह राक्षी रहने वाला है। इस जीवन के बाद आने
वाला जीवन वह द्वार है जिसको खुदुन खल की जीवन के
अन्दर तथ्य प्रकट होजायेंगे। इस जीवन का हर कार्य,
चाहे वह कितना ही मामूली बीमार न हो, इसका प्रभाव
सदा राक्षी रहने वाला होता है। वह ठीक तीर पर
भिंतिकित या अंकित हो जाता है। खुदा की कुछ कार्य
पद्धति को तो तुम समझते हो, लेकिन बहुत सी बातें
tुम्हारी समझ से दूर और नजर से आंशिक हैं। खुदा तुम
में जो चीजें छुपी हुई हैं वे दूसरी दुनिया में बिल्कुल
इस्लाम के पैगाम्बर मुहम्मद

तुम्हारे सामने खोल दी जायेंगी। सदाचारी और नेक लोगों को खुदा का यह वरदान प्राप्त होगा जिस को न आँख ने देखा, न कान ने सुना, और न मन कभी उसकी कल्पना कर सका। उसके प्रसाद और उसके वरदान क्रमशः बढ़ते ही जायेंगे और उसके अधिकाधिक उन्नति प्राप्त होती रहेगी। लेकिन जिन्होंने इस जीवन में मिले अवसर को खो दिया वे उस अनिवार्य कानून की पकड़ में आ जायेंगे, जिसके अन्तर्गत मनुष्य को अपने कर्तृत्वों का मजा चखना पड़ेगा। उनको उन आत्मिक रोगों के कारण, जिनमें उन्होंने खुद अपने आप को क्षत किया होगा, उनको इलाज के एक महर्मले से गुजरना होगा। सावधान हो जाओ! बड़ी कठोर व भयानक सजा है।

शारीरिक पीड़ा तो ऐसी यातना है, उसको तुम किसी तरह ढेर भी सकते हो, लेकिन आत्मिक पीड़ा तो जहानम (तरक) है, जो तुम्हारे लिए असह्य होगी।

अतः इसी जीवन में अपनी उन मनोवृत्तियों का मुकाबला करो, जिनका खुशाल गुनाह की ओर रहता है और वे तुम्हें पापारार की ओर प्रेरित करती हैं। तुम उस अस्थायी को प्राप्त करो, जबकि अन्तरात्मा जागृत हो जाये और महान नैतिक गुण प्राप्त करने के लिए उनको उठाओ और अवज्ञा के विरुद्ध विद्रोह करो। यह तुम्हें आत्मिक शांति की आखिरी मंजिल तक पहुँचायेगा यानी अल्लाह की रज्जा हासिल करने की मंजिल तक। और केवल
अल्लाह की रजा ही में आत्मा का अपना आनन्द भी निहित है। इस स्थिति में आत्मा के विचलित होने की संभावना न होगी, संघर्ष का मरहला गुजर चुका होगा, सत्य ही विजयी होता है और झूठ अपना हाथखार डाल देता है। उस समय सारी उलझने दूर हो जायेगी। तुम्हारा मन दुःखित में नहीं रहेगा, तुम्हारा व्यक्तित्व अल्लाह और उसके इच्छाओं के प्रति सम्पूर्ण-भाव के साथ पूर्णतः संगठित व एकीकृत हो जायेगा। तब सारी छुपी हुई शक्तियाँ और क्षमताएँ पूर्णतः स्वतंत्र हो जायेगी, और आत्मा को पूर्ण शान्ति प्राप्त होगी, तब खुदा तुम से कहेगा:—

"ऐ सन्तुष्ट आत्मा तू अपने रब से पूरे तीर पर राजी हुई तू अब अपने रब की ओर लौट चल, तू उससे राजी हैं और वह तुझ से राजी हैं, अब तू मेरे (प्रिय) बनदो में शामिल हो जा, और मेरी जन्मत में दाखिल हो जा।" (सूर्य फज़्र—)

यह है इस्लाम की दृष्टि में मनुष्य का परस लक्ष्य कि एक और तो वह इस जगत को वशीमूत करने की कोशिश में लगे और दूसरी तरफ उसकी आत्मा अल्लाह की रजा में चैन तलाश करे। केवल खुदा ही उससे राजी न हो बल्कि वह भी खुदा से राजी और सन्तुष्ट हो। इसके फलस्वरूप उसको मिलेगा चैन और पूर्ण चैन, परितोष, और पूर्ण परितोष, शान्ति और पूर्ण शान्ति। इस
अवसथा में खुदा का प्रेम उसका आहार बन जाता है और वह जीवन प्रोत से जी भर पीकर अपनी प्यास को बुझाता है। फिर न तो दुख और निराशा उसको पराजित एवं वशीमूत कर पाती है और न सफलताओं में वह इतना और आपे से बाहर होता है।

शाम्स कारलायस इस जीवन दर्शन से प्रभावित होकर लिखता है :

"और फिर इस्लाम की भी यही मांग है—हमें अपने को अल्लाह के प्रति समर्पित कर देना चाहिए, हमारी सारी शक्ति उसके प्रति पूर्ण समर्पण में निहित है। वह हमारे साथ जो कुछ करता है, हमें जो कुछ भी भेजता है,
चाहे वह मौत ही करें न हो या उससे भी बुरी कोई चीज़, वह वस्तुतः हमारे भले की और हमारे लिए उत्तम ही होगी। इस प्रकार हम खुद को खुदा की रज़ा के प्रति समर्पित कर देते हैं।"

लेखक आगे चलकर गोयटे का प्रश्न उद्धृत करता है:

"गोयटे पूछता है यदि यही इस्लाम है तो क्या हम सब इस्लामी जीवन यथार्थ नहीं कर रहे हैं?"

इसके उत्तर में कारलायल लिखता है :
“हां हम में से वे सब जो नैतिक व सदाचारी जीवन 
यतीत करते हैं वे सभी इस्लाम में ही जीवन यतीत कर 
रहे हैं। यह तो अन्ततः वह सर्वोच्च ज्ञान एवं प्रज्ञा है जो 
आकाश से इस धरती पर उतारी गयी है।”